माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का दशहरा उत्सव समारोह में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल दिनांक :- 24 अक्टूबर, 2012 समय :- शाम 6 बजे

विजयादशमी के पावन पर्व पर प्रदेशवासियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। सांस्कृतिक इतिहास का साक्ष्य है कि दशहरा पर्व श्रीराम की लंका-विजय का पर्व है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम भारतीय संस्कृति के अद्वितीय आदर्श पुरूष और काव्यशास्त्र के सर्वोत्कृष्ट लोकनायक है।

उनका चरित्र सत्य, निष्ठा, न्याय, धर्म, क्षमा, उदारता, सद्भावना और सुचिता का प्रतीक है। श्रीराम ने सर्वजन हिताय उदार चरित को चरितार्थ किया है ,इसलिए इस धर्म नायक और काव्यनायक को सर्व स्वीकृति मिली है।

राम-रावण युद्ध दो राजाओं, दो देशों, दो भूखण्डों, दो-प्रभुसत्ताओं का संग्राम नहीं है। यह दो वृत्तियों का युद्ध है। मानवीय और आसुरी वृत्तियों का द्वंद्व है। राम के बिलकुल विपरीत रावण अधर्म, अन्याय, अहंकार, आक्रोश, अत्याचार, अमानवीयता का हठी-प्रतीक है। ज्ञानी व्यक्ति यदि अन्यायी-अनाचारी हो जाये तो वह समाज के लिए ज्यादा घातक हो जाता है। रावण इसी प्रकार का अहंकार-पुंज बन गया था। दशानन होने के कारण बुद्धि-बल-चातुर्य-नीति शास्त्र का दस गुना महत्वशाली व्यक्तित्व होना चाहिए था रावण का, लेकिन उसके अपकर्मों ने इस प्रतीक को उलट दिया। उसके दस सिर दस दुर्गुणों के प्रतीक बन गये। इसलिए राम का संग्राम व्यक्ति से नहीं वृत्ति से होता है।

दशहरे के दिन रावण दहन बहुत लोकरंजक तरीके से किया जाता है लेकिन इसके प्रतीकार्थ को भी ठीक तरह से समझना चाहिये। राम की सैन्य शक्ति क्या थी? वनवासी और वानर जातियों का अकुशल संगठन। उनके अस्त्र-शस्त्र क्या थे, वृक्षों की जड़ों की गदा, बांस के तीर-कमान। इसके विपरीत रावण को अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों और न्याय-नैतिकता असमान थे। युद्ध के लक्ष्य असमान थे। आमजन को साथ लेकर धर्म युद्ध में विजय का यह अप्रतिम उदाहरण है। इसके बावजूद विजय राम की हुई, रावण की नहीं। इसका अर्थ समझिये। सत् अजर-अमर होता है। दुष्टता न अजेय होती है और न अमर। राम की जन मेदिनी रावण की चतुरंगिणी को धूल चटा देती है। यह राम की विजय है, लोकशक्ति की विजय हे, जन एकता की विजय है, सत्य की, न्याय की, धर्म की विजय है।

आज रावण दहन की प्रासंगिता क्या है?यह भी सोचना चाहिये। केवल पर्व की तरह दशहरा नहीं मनाया जा सकता। यह संकल्पधर्मा त्योहार भी है।

आज कितने सर्वग्रासी रावण हमारे समाज में कितने-कितने रूपों में उपस्थित हैं। बलात्कारी, भ्रष्टाचारी, घूसखोर, अपहरणकर्ता वृत्तियाँ तो रावण-वृत्तियाँ हैं ही। तुलसीदास के अनुसार तो राम कथा का संदेश यही है-"परहित सरस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।"

आज का दिन साम्राज्यवादी, शोषण, अत्याचार, मुनाफाखोर, जमाखोरों और धोखाधड़ी करने वाले रावणों से सतत् संघर्ष का संकल्प लेने का दिन है। अपने अंदर की बुराईयों पर विजय पाने का संकल्प लेने का यह दिन है।

यह सच है कि हर मनुष्य को अपनी बुराई नहीं दिखती है। किसके अंदर रावण है किसके अंदर नही, इसका फैसला व्यक्ति खुद तभी कर सकता है, जब वह निष्पक्ष होकर अपने को राम अर्थात अच्छाई की कसौटी पर तोलें। हमें, केवल श्रीराम का ही पावन पतिव्रता सीता जी, श्री लक्ष्मण और श्री हनुमान का भी स्मरण करना चाहिए क्योंकि इनके भी संदेश समाज को सही राह दिखाने के लिए प्रेरित करते हैं।

मैं प्रदेशवासियों से अपील करता हूं बुराइयों को जड़ से मिटाने का संकल्प लें। प्रदेश में शांति, सद्भाव, प्रेम और भाईचारे के वातावरण को सुदृढ़ बनाने के लिए एकजुट हो जायें।

जय हिन्द।